।। शशिग्रहसमागमाध्यायः ।।

चन्द्रमा की गति :

भानां यथासम्भवमुत्तरेण यातो ग्रहाणां यदि वा शशाङ्कः ।
प्रदक्षिणं तच्छुभदं नृपाणां याम्येन यातो न शिवः शशाङ्कः ।। 1 ।।

यदि नक्षत्र या ग्रह के पास से गुजरता हुआ चन्द्रमा उत्तर की ओर से जाए अर्थात् परिक्रमा के क्रम से चले तो राजाओं के लिए शुभ होता है तथा दक्षिण की ओर से गमन करे तो कल्याणकारी नहीं होता है।

कृत्तिका, रोहिणी, पुष्य, मघा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, शतभिषा व रेवती इन 10 नक्षत्रों का शर, चन्द्रमा के शर से कम या बराबर है, अतः इन नक्षत्रों के साथ चन्द्रमा का समागम होता है। जिन का उत्तर शर, चन्द्रमा के शर से अधिक है अर्थात् स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, आदि तो उनसे दक्षिण की ओर से ही सदैव चन्द्रमा जाता है।

इसी तरह जिन ग्रहों का शर चन्द्रमा के शर से कम हो या बराबर हो तो उनके भी उत्तर से चन्द्रमा जाता है।

चन्द्रमा का परम शर 5°.8'.42'' है। इसी शरानुपात से अन्य ग्रहों की भी नक्षत्र युति जाननी चाहिए। सूर्य सिद्धान्त में नक्षत्र ग्रह युति प्रकरण में इस विषय को विस्तार से समझाया गया है। सुविधार्थ यहाँ सभी नक्षत्रों के शर की सारिणी दी जा रही है।

Scanned with CamScanner

।। नक्षत्र शर (विक्षेप) सारिणी।। (अशं कला)

नक्षत्र	सूर्य सिद्धान्त शर	आधुनिक	नक्षत्र	सूर्य सिद्धान्त शर	आधुनिक
अश्विनी	10.0	9.0 उ.	स्वाती	37.0	32.56 उ.
भरणी	12.0	10.57 उ.	विशाखा	1.30	0.22 द.
कृत्तिका	5.0	4.9 उ.	अनुराधा	3.0	2.1 द.
रोहिणी	5.0	5.32 द.	ज्येष्ठा	4.0	4.37 द.
मृगशिरा	10.0	13.24 द.	मूल	9.0	13.48 द.
आर्द्रा	9.00	6.46 द.	पू. षा.	5.30	2.7 द.
पुनर्वसु	6.0	6.46 उ.	उ. षा.	5.0	1.28 द.
पुष्य	0.0	0.5 उ.	श्रवण	30.0	29.49 उ.
श्लेषा	7.0	11.24 द.	धनिष्ठा	36.0	34.15 उ.
मघा	0.0	0.29 उ.	शतभिषा	0.30	0.25 द.
पू. फा.	12.0	10.31 उ.	पू. भा.	24.00	21.6 उ.
उ. फा.	13.0	13.24 उ.	उ. भा.	26.0	13.45 उ.
हस्त.	11.0	13.17 द.	रेवती	00.0	0.14 द.
चित्रा	2.0	2.12 द.	–	–	–

जिन ग्रहों या नक्षत्रों का उत्तर शर, चन्द्र शर से अधिक होता है, उन नक्षत्रों व ग्रहों से सदैव दक्षिण की ओर से चन्द्रमा जाता है। जिनका दक्षिण शर, चन्द्रमा के शर से अधिक हो, उनसे उत्तर की ओर से चन्द्रमा जाता है। **गर्ग** ने कहा है–

नक्षत्राणां ग्रहाणां का यदा तूत्तरगः शशी।
तत्प्रदक्षिणमित्याहुर्भवेत् क्षेमसुवृष्टये।।
नक्षत्राणां ग्रहाणां वा यदा दक्षिणतो व्रजेत्।
अपसव्यं तदेव स्याद् दृष्टिभयलक्षणम्।। (गर्ग)

दक्षिण गमन का नाम अपसव्य तथा उत्तर गमन का दूसरा नाम प्रदक्षिण भी है।

Scanned with CamScanner

दक्षिणेनापसव्यं स्यादुत्तरेण प्रदक्षिणम्।
ग्रहाणां चन्द्रमा ज्ञेयो नक्षत्राणां तथैव च।। (ऋषिपुत्र)

मंगल-चन्द्र समागम फल :

चन्द्रमा यदि कुजस्य यात्युदक् पार्वतीयबलशालिनां जयः।
क्षत्रियाः प्रमुदिताः सयायिनो भूरिधान्यमुदिता वसुन्धरा।। 2।।

यदि चन्द्रमा, मंगल से उत्तर की ओर से निकल जाए तो पर्वतीय लोगों व बलवानों की विजय होती है। सभी क्षत्रिय व हमलावर राजा प्रसन्न होते हैं। पृथ्वी पर खूब अन्न पैदा होता है।

यदि दक्षिण की ओर से गमन करे तो उक्त फल से सर्वत्र विपरीत फल समझना चाहिए।

बुध-चन्द्र फल :

उत्तरतः स्वसुतस्य शशाङ्कः पौरजयाय सुभिक्षकरश्च।
सस्यचयं कुरुते जनहार्दि कोशचयं च नराधिपतीनाम्।। 3।।

यदि चन्द्रमा, अपने पुत्र अर्थात् बुध से उत्तर की ओर से गमन करे तो पौर राजा (स्थानीय राजा या स्थायी राजा) की विजय और सर्वत्र सुभिक्ष होता है। फसल, लोगों का कोष, प्रसन्नता व भण्डारों की वृद्धि होती है।

गुरु-चन्द्र समागम फल :

बृहस्पतेरुत्तरगे शशाङ्के पौरद्विजक्षत्रियपण्डितानाम्।
धर्मस्य देशस्य च मध्यमस्य वृद्धिः सुभिक्षं मुदिताः प्रजाश्च।। 4।।

बृहस्पति के उत्तर से चन्द्रमा गमन करे तो उत्तर दिशा के लोगों को, द्विजों, ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यों को, पण्डितों व विद्वानों को सुख मिलता है। मध्य देश की वृद्धि, सुभिक्ष व प्रजा में प्रसन्नता व्याप्त होती है।

शुक्र-चन्द्र समागम फल :

भार्गवस्य यदि यात्युदक् शशी कोशयुक्तगजवाजिवृद्धिदः।
यायिनां च विजयो धनुष्मतां सस्यसम्पदपि चोत्तमा तदा।। 5।।

शुक्र के उत्तर से चन्द्रमा निकल जाए तो बड़े व्यापारियों, धनाढ्यों, भण्डारण कर्त्ताओं, हाथियों, घोड़ों की वृद्धि होती है।

Scanned with CamScanner

सदाचार बन्द लोगों, योद्धाओं, सैनिकों व यायी राजाओं की विजय होती है। तथा फसलों की खूब वृद्धि होती है।

शनि-चन्द्र समागम :

रविजस्य शशी प्रदक्षिणं कुर्याच्चेत्पुरभूभृतां जयः।
शकवाहिकसिन्धुपह्लवा मुदभाजो यवनैः समन्विताः।। 6।।

यदि शनि से उत्तर की ओर से चन्द्रमा गमन करे तो पुरवासी स्थायी राजाओं की विजय होती है। शक, वाल्हीक, पह्लव, सिन्ध देशों के लोगों की वृद्धि होती है। अर्थात् इन प्रदेशों में प्रसन्नता रहती है।

फल विचार का विशेष नियम :

येषामुदग्गच्छति भग्रहाणां प्रालेयरश्मिर्निरुपद्रवश्च।
तद्द्रव्यपौरेतरभक्तिदेशान् पुष्णाति याम्येन निहन्ति तानि।। 7।।

जब चन्द्रमा किसी भी नक्षत्र या ग्रह से उत्तर की ओर से गमन करे लेकिन चन्द्रमा उत्पात रहित हो (ग्रहणादि न हो) तो पीछे नक्षत्र व्यूह व ग्रह भक्ति में बताए गए सभी प्राणियों व पदार्थों की पुष्टि करता है। लेकिन दक्षिण की ओर से गमन करे तो उन सब पदार्थों की हानि करता है।

शशिनि फलमुदक्स्थे यद् ग्रहस्योपदिष्टं
भवति तदपसव्ये सर्वमेव प्रतीपम्।
इति शशिसमवायाः कीर्तिता भग्रहाणां
न खलु भवति युद्धं साकमिन्दोर्ग्रहर्क्षैः।। 8।।

यहाँ जो फल चन्द्रमा के उत्तर गमन से बताया गया है, उसका ठीक विपरीत फल दक्षिण की ओर से गमन करने से होता है। तारा ग्रहों से चन्द्रमा का युद्ध नहीं होता अपितु समागम होता है। यह नियम है। सूर्य के साथ ग्रह संयोग से अस्तभाव व चन्द्रमा से संयोग में समागम व अन्य ग्रहों का परस्पर संयोग युद्ध, युति या योग कहलाता है।

वराह के काल में कुछ लोग सूर्य के साथ ग्रह योग होने पर भी युद्ध ही मानते होंगे। ऐसे लोगों के मत का निराकरण करने के लिए ही आचार्य ने यहाँ स्पष्ट शब्दों में उक्त बात कही है। यदि सूर्यादि के साथ युद्ध मानने वाले लोगों का अस्तित्व नहीं

Scanned with CamScanner

होता तो आचार्य चौथा सम्पूर्ण चरण इस मामूली बात में खर्च न करते। ऐसे ही लोगों के प्रति भट्टोत्पल ने कहा है –

'यैश्चोक्तमादित्यस्य जयपराजयं ते गोलवासना बाह्याः।। (भट्टोत्पल)

दिवसकरेणास्तमयः समागमः शीतरश्मिसहितानाम्।

कुसुतादीनां युद्धं निगद्यतेऽन्योऽन्य युक्तानाम्।। (विष्णुचन्द्र)

चन्द्रमा तो एक चान्द्रमास में ही सारे भचक्र की परिक्रमा कर लेता है, तब हर महीने ही नक्षत्र व ग्रह योग (समागम) होता ही रहेगा। अतः उक्त फल प्रतिमास विचारणीय होगा। इससे अन्यथा प्राप्त फल के परिपाक में तारतम्य होता है। अत्यन्त निकट योग होने पर ही उक्त फल होगा, केवल राशि साम्य से नहीं।

वर्तमान नवम्बर 95 मासारम्भ में चन्द्रमा का शर 3.11 उत्तर है तथा शनि का 6.44 दक्षिण शर है। यहाँ चन्द्रमा से शनि का दक्षिण शर अधिक है, अर्थात् शनि क्रान्ति वृत्त से दक्षिण की ओर खूब हटा हुआ है। जबकि चन्द्रमा तो क्रान्ति वृत्त से उत्तर की ओर ही है। यह योग वर्तमान इस्लामी देशों में कुशल क्षेम रखता है। बड़े ग्रह लम्बे समय तक उत्तर या दक्षिण की ओर रहते हैं। अतः अन्य संहितोक्त फलों में इससे तारतम्य होगा।

इति श्रीमहामतिवराहमिहिराचार्यकृतायां बृहत्संहितायां पं. सुरेशमिश्रकृतेऽभिनव हिन्दीभाष्ये शशि-ग्रह-समागमाध्यायोऽष्टादशः।। 18।।

Scanned with CamScanner